



उ०प्र० कृषि अनुसंधान परिषद

U.P. COUNCIL OF AGRICULTURAL RESEARCH

राजकीय उद्यान, करियप्पा मार्ग, आलमबाग, लखनऊ-226005
Rajkiya Udhyan, Cariappa Road, Alambagh, Lucknow-226005

पत्रांक: 1785/एनआरएम/डब्ल्यूबीएसएलएएजी/पीएल/2021

दिनांक: 26.12.2025

दिनांक : 26 दिसम्बर, 2025
समय : 12:00 बजे
स्थान : उपकार सभाकक्ष
उपस्थिति : संलग्न

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप) की वर्ष 2025-26 की उन्नीसवीं बैठक की कृषकों के उपयोगार्थ संस्तुतियाँ

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की वर्ष 2025-26 की उन्नीसवीं बैठक डा. संजय सिंह, महानिदेशक, उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद की अध्यक्षता में दिनांक 26 दिसम्बर, 2025 को परिषद के सभाकक्ष में सम्पन्न हुई। बैठक में चन्द्र शेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर के पूर्व मौसम वैज्ञानिक तथा गेहूँ प्रजनक, पशुपालन विभाग; उ.प्र. डिजास्टर मैनेजमेंट एथारिटी, राहत आयुक्त कार्यालय, वन विभाग, मत्स्य विभाग, कृषि रक्षा विभाग तथा उपकार के वैज्ञानिकों/अधिकारियों ने भाग लिया।

उक्त के अतिरिक्त बैठक में बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा के कीट व मौसम वैज्ञानिक; आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या के धान प्रजनक तथा पशुरोग औषधी एवं विष विज्ञान विभाग के सह प्राध्यापक; रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी के तिलहन वैज्ञानिक; बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी के दलहन वैज्ञानिक, आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ के मौसम वैज्ञानिक; शुआट्स, प्रयागराज के तकनीकी अधिकारी (ग्रा.कृ.मौ.से.), केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान के क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान तथा कृषि विभाग के वैज्ञानिकों/अधिकारियों ने ऑनलाइन प्रतिभाग किया।

प्रथम सप्ताह का मौसम पूर्वानुमान (26 दिसम्बर, 2025 से 1 जनवरी, 2026)

भारत मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान के अनुसार इस सप्ताह प्रदेश के अधिकांश कृषि जलवायु अंचलों में घने कोहरे के प्रभाव से तापमान में भारी उतार-चढ़ाव के साथ औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान सामान्य या सामान्य से आंशिक रूप से कम रहने की संभावना है। प्रदेश के भाभर-तराई क्षेत्र के पश्चिमी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 18 से 20 डिग्री से., भाभर-तराई क्षेत्र के शेष भाग, पश्चिमी मैदानी एवं मध्य पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 20 से 22 डिग्री से.; बुंदेलखंड एवं विंध्य क्षेत्र के दक्षिणी भाग में यह 24 से 26 डिग्री से. जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह 22 से 24 डिग्री से. रहने की संभावना है।

प्रदेश के दक्षिणी-पश्चिमी अर्द्धशुष्क मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान सामान्य से आंशिक रूप से (01 से 02 डिग्री से.) अधिक जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह सामान्य के आस-पास रहने की संभावना है। प्रदेश के विंध्य क्षेत्र के अधिकांश भाग एवं बुंदेलखंड के दक्षिणी भाग में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान 06 से 08 डिग्री से.; उत्तर-पूर्वी मैदानी क्षेत्र के दक्षिणी भाग, पूर्वी मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग एवं मध्य मैदानी का पूर्वी भाग में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान 10 से 12 डिग्री से. जबकि अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह 08 से 10 डिग्री से. रहने की संभावना है। इस सप्ताह के दौरान प्रदेश के समस्त कृषि जलवायु अंचलों में मौसम मुख्यतः शुष्क रहने की संभावना है।

द्वितीय सप्ताह का मौसम दृष्टिकोण (02 जनवरी से 08 जनवरी, 2026)

प्रदेश के अधिकांश कृषि जलवायु अंचलों में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान सामान्य या सामान्य से आंशिक रूप से (01 से 02 डिग्री से.) कम रहने की संभावना है। प्रदेश के भाभर-तराई क्षेत्र के पश्चिमी भाग एवं पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 18 से 20 डिग्री से.; भाभर-तराई क्षेत्र के शेष भाग, पश्चिमी मैदानी एवं मध्य पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 20 से 22 डिग्री से.; बुंदेलखंड एवं विंध्य क्षेत्र के दक्षिणी भाग में यह 24 से 26 डिग्री से. जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह 22 से 24 डिग्री से. रहने की

संभावना है। प्रदेश के दक्षिणी-पश्चिमी अर्द्धशुष्क मैदानी एवं मध्य मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग तथा मध्य पश्चिमी मैदानी, उत्तर-पूर्वी मैदानी एवं पूर्वी मैदानी क्षेत्र के पश्चिमी भाग में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान सामान्य से आंशिक रूप से (01 से 02 डिग्री से.) अधिक जबकि अन्य कृषि जलवायु अंचलों में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान सामान्य के आस-पास रहने की संभावना है। प्रदेश के भाबर तराई के पश्चिमी भाग एवं पश्चिमी मैदानी के उत्तरी भाग तथा विंध्य क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान 06 से 08 डिग्री से. जबकि अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह 08 से 10 डिग्री से. रहने की संभावना है। इस सप्ताह के दौरान पश्चिमी उत्तर प्रदेश में कहीं कहीं हल्की वर्षा एवं अन्य कृषि जलवायु अंचलों में मौसम मुख्यतः शुष्क रहने की संभावना है।

मौसम चेतावनी: प्रदेश में पड़ रहे घने कोहरे के कारण प्रथम सप्ताह के आरम्भिक 3-4 दिनों के दौरान प्रदेश भर में अधिकतम तापमान सामान्य से कम रहने के साथ बुन्देलखण्ड, पश्चिमी मैदानी एवं दक्षिणी-पश्चिमी अर्द्धशुष्क मैदानी क्षेत्र को छोड़कर अन्य कृषि जलवायु अंचलों में शीत दिवस (Cold Day) से अति शीत दिवस (Severe Cold Day) पड़ने की संभावना है।

कृषि विभाग, उ.प्र. द्वारा उपलब्ध कराये गये दिनांक 21 दिसम्बर, 2025 तक के आंकड़ों के अनुसार प्रदेश में कुल रबी की बुवाई का लक्ष्य 138.78 लाख हे. के सापेक्ष कुल रबी फसलों की बुवाई 137.13 लाख हे. में हुई है जो लक्ष्य का 98.81 प्रतिशत है। गेहूँ के आच्छादन लक्ष्य 95.19 लाख हे. के सापेक्ष 94.13 लाख हे. में बुआई हुई जो लक्ष्य का 98.88 प्रतिशत है। जौ के आच्छादन लक्ष्य 2.00 लाख हे. के सापेक्ष 2.03 लाख हे. में बुआई हुई जो लक्ष्य का 101.77 प्रतिशत है। मक्का के आच्छादन लक्ष्य 0.36 लाख के सापेक्ष 0.43 लाख हे. में बुआई हुई जो लक्ष्य का 119.76 प्रतिशत है। चना के लक्ष्य 6.90 लाख हे. के सापेक्ष 6.82 लाख हे. में बुआई हुई जो लक्ष्य का 98.84 प्रतिशत है। मटर के लक्ष्य 4.00 लाख हे. के सापेक्ष 3.75 लाख हे. में बुआई हुई जो लक्ष्य का 93.97 प्रतिशत है। मसूर के लक्ष्य 6.64 लाख हे. के सापेक्ष 6.59 लाख हे. में बुआई हुई जो लक्ष्य का 99.38 प्रतिशत है। तिलहनी फसलों में तोरिया की बुवाई लक्ष्य 5.00 लाख हे. के सापेक्ष 4.95 लाख हे. में हुई है जो लक्ष्य का 99.05 प्रतिशत है जबकि राई-सरसों के 18.23 लाख हे. लक्ष्य के सापेक्ष 18.00 लाख हे. में बुवाई हुई जो लक्ष्य का 98.77 प्रतिशत है। अलसी के 0.46 लाख हे. लक्ष्य के सापेक्ष 0.39 लाख हे. में बुवाई हुई जो लक्ष्य का 85.98 प्रतिशत है।

प्रदेश में मौसम के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में किसानों को अगले दो सप्ताह हेतु कृषि प्रबन्धन के लिए निम्नलिखित सुझाव दिये जाते हैं:-

- वर्तमान में गेहूँ की केवल अतिविलम्ब से बोई जाने वाली किस्मों का समय है अतः बुवाई हेतु अतिविलम्ब से बोई जाने वाली संस्तुत किस्मों का ही चयन करें।
- तिलहनी फसलों में माहू के प्रकोप के लिये मौसम अनुकूल है अतः संस्तुति अनुसार उपचार करें।
- एकीकृत कीट प्रबन्धन के लिए रबी की समस्त सब्जी फसलों में नीम सीड कर्नेल एक्सट्रैक्ट 5 मि.ली. प्रति 10 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। इसका छिड़काव 10-15 दिनों के अन्तराल पर करना चाहिए।
- वर्तमान मौसम में पशुओं में शीत तनाव की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। अतः पशुओं को हवादार किन्तु ठंडी एवं तेज हवा से सुरक्षित (ड्राफ्ट फ्री) आवास में रखा जाय तथा नवजात बछड़ों को अलग, अधिक गर्म एवं सुरक्षित स्थान पर विशेष देखभाल के साथ रखा जाय।
- राष्ट्रीय पशुरोग नियंत्रण कार्यक्रम के अंतर्गत पशुओं में एफ.एम.डी. का टीकाकरण 22.01.2026 से प्रत्येक जनपद के समस्त पशु चिकित्सालयों के माध्यम से टीकाकरण कार्यकर्ताओं द्वारा निःशुल्क कराया जाना प्रस्तावित है, जिसका लाभ कृषक/पशुपालक अपने जनपदीय मुख्य पशुचिकित्सा अधिकारी या निकटस्थ पशुचिकित्सा अधिकारी से संपर्क कर उठा सकते हैं।
- पशु समस्या निवारण केन्द्र का टोल फ्री नं. 18001805141 है जिसका उपयोग पशुपालक पशु चिकित्सा संबंधी किसी भी समस्या के निवारण हेतु कर सकते हैं।
- वर्तमान समय शीत ऋतु का है ऐसे समय में तालाबों में अल्सरेटिव डिजीज सिंड्रोम की बीमारी परिलक्षित होती है अतः कृषकों को सलाह दी जाती है कि अपने-अपने तालाबों में 2.00 से 2.5 कु. प्रति हे. की दर से बुझे हुये चूने का प्रयोग करें।
- तालाब में पानी का उचित तापमान बनाये रखने के लिए तालाब में हर दूसरे दिन ताजे पानी का बहाव सुनिश्चित करें। कार्प मछली वाले तालाब में न्यूनतम पानी का स्तर 5 फीट बनाये रखें।

गेहूँ की खेती

- गेहूँ की अति विलम्ब से बुवाई हेतु क्षेत्रीय संस्तुत किस्मों यथा पी.बी.डब्लू-833, एच.डी.-3271, एच.आई. 1621, के. 7903 (हलना) एवं के. 9423 (उन्नत हलना) आदि की बुवाई 15 जनवरी तक कर दें।
- विलम्ब से गेहूँ की बुवाई करने पर गेहूँ की बीजदर सामान्य से 25 प्रतिशत (125 कि.ग्रा./हे.) बढ़ाकर बुवाई करें तथा विलम्ब से ही बोई जाने वाली किस्मों का चयन करें।
- गेहूँ की बुवाई के 20-25 दिन बाद पहली हल्की सिंचाई (ताजमूल अवस्था में) अवश्य करें।
- हल्की भूमियों में प्रथम सिंचाई के बाद ओट आने पर तथा भारी भूमियों में सिंचाई से पूर्व नत्रजन की शेष मात्रा की आधी मात्रा की टॉपड्रेसिंग करें।
- गेहूँ की बुवाई के 20-30 दिन के मध्य पहली सिंचाई के आस-पास पौधों में जिंक की कमी के लक्षण प्रकट होते हैं। लक्षण दिखाई देने पर 5 किग्रा. जिंक सल्फेट तथा 16 किग्रा. यूरिया को 800 लीटर पानी में घोलकर प्रति हे. की दर से छिड़कें। यूरिया के स्थान पर 2.5 किग्रा. बुझे हुए चूने के पानी (2.5 किग्रा. बुझे चूने को 10 लीटर पानी में सायंकाल भिगोकर दूसरे दिन पानी निथार कर पानी) का प्रयोग करें।
- गेहूँसा एवं जंगली जई आदि संकरी पत्ती वाले खरपतवारों के नियंत्रण के लिये खरपतवारनाशी पिनोक्साडेन (एक्सल 5 ई.सी.) 1.0 ली. को 500 लीटर पानी में घोलकर अथवा सल्फोसल्फयूरान 75 प्रतिशत डब्लू.जी. की 33 ग्राम (2.5 यूनिट) को 300 लीटर पानी में घोल बनाकर अथवा आइसोप्रोट्यूरॉन 75 प्रतिशत डब्लू.पी. की 1.25 किलोग्राम प्रति हे. 500 से 600 लीटर पानी में घोल बनाकर बुवाई के 30-35 दिन बाद छिड़काव करें।
- चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार के नियंत्रण के लिये मेटसल्फयूरॉन (एलग्रीप) 20 ग्रा. दवा को 500 ली. पानी में घोलकर अथवा कार्फेन्ट्राजोन (एफीनीटि) 50 ग्रा. दवा को 500 ली. पानी में घोलकर अथवा 2-4डी, सोडियम साल्ट 80 प्रतिशत की 625 ग्राम प्रति हे. अथवा 2-4डी मिथाइल एमाइन साल्ट 58 प्रतिशत एस.एल. की 1.25 लीटर प्रति हे. की मात्रा को लगभग 500 से 600 पानी में घोल बनाकर बुवाई के 30 से 35 दिन बाद छिड़काव करना चाहिये।
- संकरी एवं चौड़ी पत्ती दोनों प्रकार के खरपतवारों के एक साथ नियंत्रण हेतु पिनोक्साडेन (एक्सल 5 ई.सी.) 1.0 ली+कार्फेन्ट्राजोन (एफीनीटि) 50 ग्रा. को 500 ली. पानी में घोलकर अथवा सल्फोसल्फयूरान 75 प्रतिशत+मेटासल्फयूरॉन मिथाइल 20 प्रतिशत डब्लू.जी. 20 ग्राम 1250 मि.ली. सर्फेक्टेंट प्रति हे. अथवा मेट्रीब्यूजिन 70 प्रतिशत डब्लू.पी. की 250 से 300 ग्राम मात्रा को 500 से 600 लीटर पानी में घोलकर प्रति हे. की दर से फ्लैटफैननॉजिल से प्रथम सिंचाई के बाद 25 से 30 दिन की अवस्था पर छिड़काव करें।

जौ की खेती

- फसल की पहली सिंचाई बुवाई के 30 से 35 दिन बाद कल्ले फूटते समय व दूसरी दुग्धावस्था में करें।
- खरपतवारनाशी का उपयोग गेहूँ की भांति करें तथा खरपतवारों के नियंत्रण हेतु संस्तुत रसायनों का समय से प्रयोग करें।

तिलहनी फसलों की खेती

- राई/सरसों के प्रमुख कीट माहू तथा चित्रित बग के नियंत्रण हेतु ऑक्सीडेमेटॉन मिथाइल 25 प्रतिशत ई.सी. 1.0 ली. प्रति हेक्टेयर की दर से अथवा डाईमथोएट 30 प्रतिशत ई.सी. 650 मि.ली. प्रति हेक्टेयर की दर से 700-750 ली. पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- सफेद गेरूई एवं तुलासिता रोग के नियंत्रण हेतु मेटालेक्जल 4 प्रतिशत+मेंकोजेब 64 प्रतिशत डब्लू.पी. की 2.5 कि.ग्रा. मात्रा प्रति हेक्टेयर लगभग 1000 ली. पानी में घोलकर छिड़काव करें।

दलहन की खेती

- चने की फसल में एक सिंचाई फूल आने से पूर्व करनी चाहिये। फूल आते समय सिंचाई कदापि न करें।
- खेत में जगह जगह सूखी घास के छोटे छोटे ढेर को रख देने से दिन में कटुआ कीट की सूड़िया छिप जाती है, जिसे प्रातः काल एकत्र कर नष्ट कर देना चाहिये।
- मटर में फूल आने के समय आवश्यकतानुसार सिंचाई करें तथा पत्तियों, फलियों और तनों पर सफेद चूर्ण की तरह फैले बुकनी रोग (पाउडरी मिल्ड्यू) की रोकथाम के लिये घुलनशील गंधक 80 प्रतिशत

2 किग्रा. अथवा ट्राईडेमोफॉन 25 प्रतिशत डबलू.पी. 250 ग्राम/हे.लगभग 500–600 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

रबी मक्का की खेती

- समय से बोई गई रबी मक्का की फसल में द्वितीय सिंचाई करें तथा उचित नमी की अवस्था में नत्रजन की एक चौथाई मात्रा की टॉपड्रेसिंग करें।
- रबी मक्का की बुवाई के 20 से 25 एवं 40 से 45 दिन बाद निराई गुड़ाई करें।

गन्ना की खेती

- शरदकाल में गन्ने के साथ बोई गई अंतः फसल की कटाई/खुदाई के बाद फसल अवशेषों को गन्ने की दो लाईनों के बीच में डालकर गुड़ाई कर दें।
- गिरते तापमान को देखते हुए समय-समय पर गन्ने की सिंचाई करते रहें जिससे फसल पर तापमान का कोई प्रतिकूल प्रभाव न पड़े।
- शरदकालीन बावक गन्ने की कटाई के उपरान्त पेड़ी फसल में बेहतर फुटाव हेतु 100 कु. ताजी प्रेसमड गन्ने की लाईनों में डालकर गुड़ाई करें जिससे पेड़ी का फुटाव बेहतर होगा।
- चीनी मिलों में आपूर्ति हेतु गन्ने की कटाई जमीन की सतह से करें।
- रेडरॉट प्रभावित खेत में फसल-चक्र अपनाएं।

सब्जियों की खेती

- सब्जियों के खेतों में विशेषतया टमाटर, मिर्च फसल में विषाणु रोग का प्रकोप अधिक हो रहा है। इसका फैलाव सफेद मक्खी/हापर कीट के द्वारा होता है। इसके फैलाव की राकथाम हेतु डाईमिथोएट अथवा इमिडाक्लोप्रिड 1 मिली को प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- आलू की फसल में झुलसा बीमारी के रोकथाम हेतु मैन्कोजैब/प्रोपीनेब/कार्बेन्डाजिम युक्त फफूंदनाशी की 2.0–2.5 कि.ग्रा. मात्रा 1000 ली0 पानी में घोलकर प्रति हेक्टर छिड़काव करें। जिन खेतों में बीमारी का प्रकोप हो चुका है, उनमें किसी भी फफूंदनाशक-साईमोक्सेनिल 8 प्रतिशत + मैन्कोजेब 64 प्रतिशत डबलू.पी का 2–2.5 किलोग्राम 1000 लीटर पानी में घोलकर 15–15 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें।
- गोभीवर्गीय फसलों में डायमंड बैक मॉथ का प्रकोप होने पर क्लोरेन्टरानिलिप्रोल 0.5–1 मिली रसायन प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर का छिड़काव करें।
- टमाटर तथा मिर्च की फसल को झुलसा रोग से बचाव हेतु 0.2 प्रतिशत (2 ग्राम/ली.) की दर से मैन्कोजेब का छिड़काव करें। फसल को कीटों से बचाव हेतु ब्यूवेरिया वेसियाना (फफूंद) 3–5 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोलकर या नीम आधारित कीट नाशकों का प्रयोग करें।
- बैंगन की फसल में प्ररोह एवं फल छेदक कीट की रोकथाम के लिए ब्यूवेरिया वेसियाना (फफूंद) 3–5 ग्राम या फ्लूबेन्डामाइड 0.5–0.75 मिली रसायन प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर का छिड़काव करें।
- लहसुन में 200 किग्रा0 कैल्शियम अमोनियम नाइट्रेट या 100 किग्रा यूरिया/हे0 की दर से टॉप ड्रेसिंग करें। ध्यान रहे कि यूरिया का प्रयोग सिंचाई के बाद करें जबकि कैल्शियम अमोनियम नाइट्रेट का प्रयोग करने के बाद सिंचाई करें।

बागवानी

- छोटे पौधों को कोहरे से बचाने के लिए हल्की सिंचाई करें व उन्हें ढक कर रखें।
- आम के बागों की गहरी जुताई आम के पेड़ के छाया क्षेत्र से बाहर करें ताकि मिज कीट, फल मक्खी, गुजिया कीट एवं जाला कीट की वे अवस्थायें जो भूमि में दूसरे वर्ष आने तक पड़ी रहती है, नष्ट हो जाये।
- दिसम्बर से जनवरी माह में पुरानी अनुत्पादक बागों पर जीर्णोद्धार अन्तर्गत विकार युक्त एवं घनी शाखाओं का कृन्तन कार्य करें तथा कृन्तित भाग पर कॉपर ऑक्सीक्लोराइड का लेप लगायें।
- आम/लीची में मिलीबग (गुजिया) कीट को पेड़ों पर चढ़ने से रोकने के लिए पेड़ के तनों पर चारों ओर 400 गेज की मोटी सफेद पालीथीन की 25 सेन्टीमीटर की चौड़ी पट्टी लपेटकर भूमि से लगभग 40 सेन्टीमीटर ऊपर मिट्टी की पतली परत चढ़ा दें तथा नियंत्रण हेतु 2 प्रतिशत मिथाइल पैराथियान चूर्ण (200 ग्राम/पेड़) तने के चारों तरफ ओर बुरकाव करें।

- आम में यदि शाखाओं में डाइबैक रोग/गोंद निकलने की समस्या हो तो पौधों की जड़ों के पास 200–400 ग्रा. कॉपर सल्फेट प्रति वृक्ष की दर से प्रयोग करें तथा थायोफिनट मिथाइल 1 मिली रसायन प्रति लीटर पानी में घोलकर पर्णीय छिड़काव करें।
- अमरुद में छाल खाने वाली इल्ली की रोकथाम के लिए सबसे पहले पतले तार या साइकिल की तीली से सुराखों की सफाई करे, नियंत्रण हेतु डाईक्लोरवास को रूई में भिगोकर सुराखों में भरकर गीली मिट्टी का लेप लगायें।
- गुलाब में बडिंग का कार्य, सिंचाई, निराई, सफाई करें एवं पत्तियों में ब्लैक लीफ स्पॉट रोग जिसमें पत्तियां झुलसी हुई प्रतीत हो कार्बेन्डाजिम 3.0 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर 8–10 दिनों के अंतराल पर छिड़काव करें।
- ग्लैडियोलस में सिंचाई, निराई, गुड़ाई करें तथा मुरझाई हुई टहनियों को निकालते रहें एवं फूल खिलने के बाद डंठलों की कटाई-छटाई करें।
- रोजरी में लगे गुलाब के पौधों की कटिंग उपरान्त विंटरिंग के लिए खोदे गये गड्डो की मिट्टी में कम्पोस्ट, उर्वरक, नीम खली, बोनमील का मिश्रण निर्धारित अनुपात में मिलाकर भराई करें।

पशुपालन

- पशुओं को ठंड से बचाव के लिये पशुबाड़ों को चारों ओर त्रिपाल से ढकें व अधिक ठंड होने की स्थिति में अलाव की व्यवस्था करें एवं पशुबाड़ों में बिछावन को अवश्य डालें।
- पशुओं में प्रजनन संबंधी समस्त रोगों के निराकरण हेतु पशुपालकों को सलाह दी जाती है कि हरा चारा, भूसा, पशु आहार के अतिरिक्त खनिज लवण अवश्य खिलायें।
- पशुओं को केवल हरा चारा न खिलायें उनको 60:40 के अनुपात में हरा एवं सूखा चारा मिलाकर ही खिलायें।
- व्यस्क बाह्य परजीवी के संक्रमण से बचाव हेतु किलनीनाशक दवा का प्रयोग पशु चिकित्सक की सलाह पर करें।
- कृषकों/पशुपालकों के द्वार पर पशुचिकित्सा उपलब्ध कराने हेतु विभाग के द्वारा मोबाइल वेटनरी यूनिट योजना का संचालन किया जा रहा है। इस योजना का लाभ लेने हेतु सभी कृषक/पशुपालक टोल फ्री हेल्पलाइन नं.-1962 पर सम्पर्क कर योजना का लाभ ले सकते हैं।
- राष्ट्रीय पशुधन बीमा योजना के अन्तर्गत पशुपालकों को अपने पशुओं का बीमा, बीमा कंपनी द्वारा निर्धारित दर से 85 प्रतिशत छूट पर किया जा सकता है, जिसका लाभ कृषक/पशुपालन अपने जनपदीय मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी या निकटस्थ पशु चिकित्सा अधिकारी से सम्पर्क कर उठा सकते हैं।

मत्स्य पालन

- कार्प मछली वाले तालाब में ठंड के मौसम में 15 दिनों के अन्तराल पर जाल चलायें।
- औसत तापमान 15 डिग्री सेल्सियस से कम होने पर पूरक आहार का प्रयोग बंद कर तालाब में प्राकृतिक भोजन की उपलब्धता सुनिश्चित करें। तालाब में पूरक आहार का प्रयोग 1 से 1.5 प्रतिशत मछली के कुल शरीर भार की दर से करें।
- तालाब में ठंड के मौसम में प्राकृतिक भोजन (प्लैंक्टॉन) की उपलब्धता सुनिश्चित करने हेतु प्रति सप्ताह प्रति एकड़ की दर से 25 किलोग्राम सरसों की खली, 5 किलोग्राम सिंगल सुपर फॉस्फेट, 2 किलोग्राम सूक्ष्म खनिज तत्व (मिनरल मिक्चर) पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- तालाब के मिट्टी एवं पानी की गुणवत्ता बनाये रखने के लिए 15 दिनों के अन्तराल पर पी. एच. मान के अनुसार 15–20 किलोग्राम/ एकड़ की दर से चूना का प्रयोग घोल कर करें।
- मछलियों को संक्रमण से बचाव के लिए प्रति एकड़ 500 ग्राम पोटेशियम परमैंगनेट या 500 एम.एल. की दर से वाटर सेनिटाईजर का प्रयोग करें।
- माह में एक बार 400 किलोग्राम गोबर/एकड़ की दर से घोल कर छिड़काव करें।

- बदलते मौसम में फफूँद एवं पारासाइटिक संक्रमण से मछली को बचाने हेतु 40–50 किलोग्राम/एकड़ की दर से तालाब में नमक का छिड़काव करें एवं भोजन के साथ भी 5 से 6 ग्राम/किलोग्राम भोजन के हिसाब से माह में 7 से 10 दिनों तक मछलियों को खिलाएँ।
- तापमान अधिक गिरने (15 डिग्री सेल्सियस) एवं कोहरे की स्थिति में तालाब में किसी तरह का क्रिया-कलाप यानि भोजन, चूना, खाद, गोबर इत्यादि का प्रयोग बंद कर देना चाहिए।

रेशम पालन

- कृषक/कीटपालक ई-डिस्ट्रिक्ट विभागीय यू.आर.एल. <http://sericulture.eservicesup.in> पर अपना पंजीकरण कराते हुये आवश्यक कीटाणु मात्रा आरक्षित करा लें। किसी भी प्रकार की असुविधा/जानकारी के लिये दिये गये नंबर पर सम्पर्क करें 7388305554

वानिकी

- कृषक भाइयों से अनुरोध है कि वह कृषि वानिकी खेती को बढ़ावा दें इससे मृदा में घट रहे जीवांश कार्बन की बढ़ोत्तरी होगी जिससे मृदा उर्वरता में सुधार होगा तथा कृषक कार्बन क्रेडिट के द्वारा अतिरिक्त आय भी कर सकेंगे।
- यूकेलिप्टस पौध को अंकुरण कक्ष से छाया कक्ष में स्थानान्तरित कर दें अन्यथा कोहरे से नुकसान होगा।
- पॉपलर की कटिंग क्यारियों में लगा दें तथा बकैन जैसे पतझड़ी पौधों का रोपण कर दें।
- वृक्षारोपण हेतु स्थल का चयन कर लें।

राज्य आपदा प्रबंधन

- राज्य आपदा मोचक निधि के अन्तर्गत फसल क्षति पर रु. 8500 से 22500 प्रति हे. तक तथा खेतों में जमीन गाद हटाने के लिये 18 हजार प्रति हे. तथा पशु की क्षति पर रु. 4000 से 37500 तक तथा पशुबाड़ा की क्षति पर रु. 3000 तक की राहत वितरित की जाती है। अधिक जानकारी हेतु डिस्ट्रिक्ट डिजास्टर मैनेजमेन्ट एथोरिटी के कंट्रोल रूम 1077 अथवा राज्य आपदा कंट्रोल रूम 1070 पर सम्बंधित जानकारी हेतु सम्पर्क स्थापित करें।
- अत्यधिक ठण्ड के दौरान बंद कमरे में हीटर, अंगीठी आदि का उपयोग करते समय हवा की निकासी का समुचित प्रबन्धन अवश्य करें।

नोट:- क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की बैठक की संस्तुतियां वेबसाईट upcar.up.gov.in पर भी उपलब्ध हैं।

- क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की संस्तुतियां कृषि विज्ञान केन्द्रों तथा एफ.पी.ओ. को प्रेषित की जा रही हैं, इनसे अनुरोध है कि यदि इनके कोई सुझाव हो तो परिषद के ईमेल upcar12@gmail.com पर प्रेषित करने का कष्ट करें जिससे आगामी बैठकों में उनके सुझावों पर चर्चा कर संस्तुतियां दी जा सकें।



(डा. संजय सिंह.)

महानिदेशक

प्रतिलिपि: उपरोक्त की प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित।

1. निजी सचिव, माननीय मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
2. निजी सचिव, माननीय राज्य मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय राज्य मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
3. निजी सचिव, माननीय अध्यक्ष, को माननीय अध्यक्ष जी के अवलोकनार्थ।
4. निजी सचिव, मुख्य सचिव, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
5. निजी सचिव, कृषि उत्पादन आयुक्त, उ.प्र. शासन को महोदय के सूचनार्थ।
6. प्रमुख सचिव, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
7. अपर मुख्य सचिव, उद्यान, उ.प्र. शासन।
8. अपर मुख्य सचिव, पशुपालन, उ.प्र. शासन।

9. अपर मुख्य सचिव, मत्स्य, उ.प्र. शासन।
10. अपर मुख्य सचिव, रेशम, उ.प्र. शासन।
11. अपर मुख्य सचिव, नियोजन योजना भवन, लखनऊ।
12. कुलपति, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर, आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या, सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ, बॉदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बॉदा, सै. हिगिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
13. गन्ना आयुक्त, गन्ना आयुक्त कार्यालय, 17 न्यू बेरी रोड, गन्ना किसान संस्थान, डालीबाग, लखनऊ।
14. आयुक्त एवं सचिव, राजस्व परिषद उ.प्र., केसरबाग, लखनऊ।
15. राहत आयुक्त, उ.प्र. शासन को इस आशय से प्रेषित कि वह ग्राम प्रधान को समूह की संस्तुतियां प्रेषित करेंगे।
16. अपर मुख्य कार्यपालक अधिकारी, उ. प्र. राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, लखनऊ।
17. समस्त जिलाधिकारी, उ.प्र.।
18. निदेशक कृषि, कृषि भवन, लखनऊ।
19. निदेशक, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ।
20. निदेशक, केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ।
21. निदेशक, राष्ट्रीय मत्स्य आनुवांशिकी संसाधन ब्यूरो, लखनऊ।
22. अध्यक्ष, केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, लखनऊ।
23. निदेशक, उ.प्र. गन्ना शोध परिषद, शाहजहांपुर।
24. निदेशक, रेशम, रेशम विभाग, गोमती नगर, लखनऊ।
25. निदेशक, मत्स्य, मत्स्य निदेशालय, फैजाबाद रोड, लखनऊ।
26. निदेशक, उद्यान, उद्यान विभाग, लखनऊ।
27. निदेशक, पशुपालन, पशुपालन विभाग, लखनऊ।
28. निदेशक, राज्य कृषि प्रबंधन संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ।
29. प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं विभागाध्यक्ष, वन विभाग, 17 राणा प्रताप मार्ग, नरही, लखनऊ।
30. प्रबन्ध निदेशक, बीज विकास निगम, बादशाहनगर, लखनऊ।
31. निदेशक, सांख्यिकी, कृषि विभाग, उत्तर प्रदेश।
32. निदेशक प्रसार, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर/ आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या/ सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ/ बॉदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बॉदा/ सै. हिगिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
33. निदेशक, दूरदर्शन, लखनऊ।
34. निदेशक, आकाशवाणी, लखनऊ।
35. निदेशक, रिमोट सेन्सिंग एप्लीकेशन सेण्टर, सेक्टर जी, जानकीपुरम, कुर्सी रोड, लखनऊ।
36. निदेशक, कृषि मौसम, मौसम केन्द्र, अमौसी, लखनऊ।
37. निदेशक सूचना, सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, उ.प्र. लखनऊ।
38. अपर कृषि निदेशक(सामान्य), कृषि निदेशालय, कृषि भवन, लखनऊ।
39. अपर कृषि निदेशक, प्रसार, कृषि भवन, लखनऊ।
40. अपर कृषि निदेशक, कृषि रक्षा, कृषि भवन, लखनऊ।
41. संयुक्त कृषि निदेशक, शोध एवं मृदा सर्वेक्षण, कृषि भवन, लखनऊ को किसान कॉल सेंटर के उपयोगार्थ प्रेषित।
42. कृषि विभाग के सभी संयुक्त कृषि निदेशक, उप कृषि निदेशक एवं जिला कृषि अधिकारी
43. प्रदेश के 20 कम्युनिटी रेडियो।
44. प्रदेश के समस्त कृषि विज्ञान केन्द्र
45. प्रदेश के 1500 एफ.पी.ओ.

46. बैठक में उपस्थित संबंधित अधिकारी/वैज्ञानिक।
47. निजी सचिव महानिदेशक, उपकार को महानिदेशक महोदय के सूचनार्थ।



(विनोद कुमार तिवारी)

प्रधान वैज्ञानिक अधिकारी एवं सदस्य सचिव

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्राफ वेदर वाच ग्रुप) की वर्ष 2025-26 की
उन्नीसवीं बैठक दिनांक 26 दिसम्बर, 2025 की उपस्थिति

1. डा. संजय सिंह, महानिदेशक, उपकार, लखनऊ।
2. डा. ए.के. सिंह, सचिव, उपकार, लखनऊ।
3. डा. विनोद कुमार तिवारी, प्रधान वैज्ञानिक अधिकारी एवं सदस्य सचिव, उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद, लखनऊ।
4. डा. सोमवीर सिंह, सह प्राध्यापक, आनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग, चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर।
5. डा. गौरव वार्ष्णेय, संयुक्त निदेशक, वन विभाग, लखनऊ।
6. श्री अतुल कुमार सिंह, प्रभारी वैज्ञानिक, आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ (ऑनलाइन)।
7. डा. सौरभ दीक्षित, राईस ब्रीडर, क्राफ रिसर्च स्टेशन, मसौधा, आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या (ऑनलाइन)।
8. डा. एस.एन. पाण्डेय, पूर्व मौसम वैज्ञानिक, चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर।
9. डा. सुरेन्द्र कुमार सिंह, प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष (कीट विज्ञान विभाग), बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा (ऑनलाइन)।
10. डा. सत्यव्रत सिंह, सह प्राध्यापक, पशु रोग औषधि एवं विष विज्ञान विभाग, आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या (ऑनलाइन)।
11. डा. दिनेश शाह, प्राध्यापक, शस्य विज्ञान एवं इंचार्ज, एग्रोमेट आबजरवेट्री, बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा (ऑनलाइन)।
12. डा. जे. जार्बेन, सह प्राध्यापक, आनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी (ऑनलाइन)।
13. श्री अमित कुमार, ओएसडी, राहत आयुक्त कार्यालय, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
14. श्री शशि कुमार, ओएसडी, राहत आयुक्त कार्यालय, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
15. श्री सुनील कुमार राय, संयुक्त निदेशक प्रक्षेत्र एवं पशुधन विकास, पशुपालन विभाग, उत्तर प्रदेश।
16. श्री के.पी.सिंह, उप कृषि निदेशक, (सांख्यिकी), कृषि निदेशालय, उत्तर प्रदेश (ऑनलाइन)।
17. श्रीमती प्रियंका द्विवेदी, प्रोजेक्ट एक्सपर्ट, उ.प्र. डिजास्टर मैनेजमेंट एथारिटी, प्रथम तल पिकअप भवन, गोमती नगर, लखनऊ।
18. डा. राकेश चौधरी, वैज्ञानिक, आनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग, रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी (ऑनलाइन)।
19. डा. अनुष्का पाण्डेय, प्रोग्राम मैनेजर, क्राफ वेदर वॉच ग्रुप, उपकार, लखनऊ।
20. श्री नरेन्द्र कुमार, एस.टी.ए.-ए, पादप रक्षा विभाग, कृषि विभाग, लखनऊ।
21. श्री प्रवीण कुमार श्रीवास्तव, एस.एफ.आई., मत्स्य विभाग, लखनऊ।
22. श्री प्रतीक कुमार, तकनीकी अधिकारी, शुआट्स, प्रयागराज (ऑनलाइन)।